प्रेस विज्ञप्ति

आचार्य महाप्रज्ञ चातुर्मास व्यवस्था समिति

सरदारशहर 331 401

Email : terapanthpr@gmail.com * Fax : 01564-220 233

प्रज्ञा के द्वारा धर्म की समीक्षा की जाती है : आचार्य महाश्रमण

सरदारशहर 30 जून, 2010

आचार्य महाश्रमण ने श्री समवसरण में उपस्थित धर्मसभा को संबोधित करते हुए धम्मपद और उत्तराध्ययन के तुलनात्मक प्रवचन में कहा कि दो प्रकार के चित्त वाले व्यक्ति होते हैं एक स्थिर चित्त और दूसरा अवस्थित चित्त। स्थिर चित्त वाला व्यक्ति चंचल नहीं होता, राग-द्वेष में नहीं जाता है। अनुकूल प्रतिकूल स्थिति में सम रहने का अभ्यास करता है। जिसकी प्रसन्नता में चंचलता होती है, श्रद्धा भी नहीं रहती ऐसे में प्रज्ञा का पूरा विकास भी नहीं हो सकता वह व्यक्ति अवस्थित चित्त वाला होता है। प्रसन्नता का स्थायित्व अपेक्षित है। उत्तराध्ययन में प्रज्ञा के लिए कहा गया, प्रज्ञा के द्वारा धर्म की समीक्षा का जाती है।

आचार्यश्री महाश्रमण ने कहा कि जो व्यक्ति राग की चेतना से मुक्त होता है, मनोज्ञ वस्तु मिलने पर भी ज्यादा आनन्द में नहीं जाता, उसकी प्रज्ञा स्थित होती है। जिसका चित्त काम, क्रोध, माया, लोभ है से रंजित रहता है, समता की पुष्टि नहीं होती, प्रज्ञा में कमी रह जाती है। मनुष्य में लोभ होता है तो पद की आकांक्षा होती है, धन की आकांक्षा पैदा होती है। जिस व्यक्ति का चित्त अस्थिर होता है वह गली निकालने की बात करता है, नियम भंग करने की चेष्टा करता है। चित्त स्थिर होता है तो गली निकालने की बात नहीं होती है।

आचार्य महाश्रमण ने कहा कि प्रज्ञा के द्वारा धर्म की समीक्षा हाती है, अवस्थित चित्त धर्म को नहीं मानने वाला है उसमें परिपूर्ण पज्ञा का विकास नहीं हो सकता।

आचार्य तुलसी की 14वीं पुण्यतिथि के अवशिष्ट कार्यक्रम में मुनि श्रेयांस कुमार ने गीत के द्वारा भावांजलि प्रस्तुत की, मीनाक्षी बूच्चा, महिमा बोथरा ने गीत व कविता के माध्यम से अपनी भावांजलि दी। इस अवसर पर आचार्य महाप्रज्ञ चातुर्मास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष सुमतिचन्द गोठी विशेष रूप से उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीत कुमार ने किया।

शीतल बरड़िया
(मीडिया संयोजक)